International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 10 Issue 04, April 2020
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कोरोना काल में हिंदी साहित्यिक सफर

डॉ निशा जैन

सहायक प्राध्यापक हिंदी

सार

वैश्विक महामारियाँ हमारे समय और भविष्य को प्रभावित करती रहती हैं कोरोना महामारी के संकट ने साहित्य को भी किसी और चीज की तरह प्रभावित किया है। कई प्रकाशन बंद हैं। प्रिंटिंग प्रेस में कई किताबें इंतजार कर रही हैं। दिल्ली, भोपाल से लेकर देश की कई राजधानियों तक हर साल आयोजित होने वाले साहित्यिक मंच वीरान हो गए हैं। पुस्तकालय धूल फांक रहे हैं। इसके साथ ही इस वायरस ने कवियों और लेखकों को लिखने के लिए नई छवियाँ दी हैं। उनके सोचने का तरीका और नज़रिया भी बदल गया है। अब इस वैश्विक महामारी पर कविताएँ और कहानियाँ लिखी जा रही हैं। आपकी निजी डायरी को 'कोरोना डायरी' या 'लॉकडाउन डायरी' कहा जा रहा है। यह कहा जा सकता है कि अब कई साहित्यिक कृतियों में कोरोना वायरस इसका केंद्र या उसकी छवि होगा। उसी तरह जैसे विश्व युद्ध के दौर में उस त्रासदी का दंश कई लेखकों के उपन्यासों और कविताओं में उभरा। ऐसे कई लेखक और कवि हैं जिनकी साहित्यिक कृतियाँ विश्व युद्ध के प्रभाव को दर्शाती हैं। हालाँकि, साहित्य की अभिव्यक्ति कभी रुकती नहीं है। लॉकडाउन के दौरान जिस तरह से एक व्यापारी की किराना दुकान बंद रही, साहित्य की अभिव्यक्ति कभी नहीं रुकी साहित्यिक निर्माण हर कीमत पर जारी रहा।

मुख्यशब्द : कोरोना, साहित्य , *महामारी*

प्रस्तावना

कहते हैं साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में उत्पन्न हर गतिविधि को साहित्यकार साहित्य में दर्ज करता है। कोरोना काल में समाज में अनेक उथल–पुथल हो रहा है। एक ओर जहाँ लोग कोरोना महामारी से त्रस्त हैं वहीं दूसरी ओर इसका कोई समुचित इलाज नहीं हैं। कोई भी दवा कारगर सिद्ध नहीं हो रही है।

कोरोना काल में हिन्दी साहित्य का प्रतिदिन विस्तार होता रहा, उसमें सदा नए विषयों का समावेश हो रहा है। हिन्दी का पाठक देश–विदेश की साहित्यिक हलचल में रूचि लेता है और कुछ रचनाकार उसे इन हलचलों से रू–ब–रू कराते रहते हैं। इस साल साहित्य का नोबेल पुरस्कार उपन्यासकार अब्दुलरजाक गुरनाह को प्राप्त हुआ तथा

अब्दुलरजाक गुरनाह पर कई वेबीनार हुए। तत्काल वरिष्ठ साहित्यकार प्रियदर्शन तथा विजय शर्मा ने गुरनाह के जीवन तथा कार्य पर लेख लिखे जो विभिन्न माध्यमों पर प्रकाशित हुए। विजय शर्मा की 'मृत्यु' विश्व साहित्य की एक यात्रा' तथा 'वर्जित संबंध नोबेल साहित्य में' 2021 में प्रकाशित हुआ। अरविंद दास के 'मीडिया के मानचित्र' हाल में प्रकाशित हुए है।

विज्ञान क्षेत्र में हिंदी साहित्यिक सफर

वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार–विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया।

कोविड–19 की प्रथम वर्षगाँठ– डॉ.रश्मि वार्ष्णेय उप निदेशक (राजभाषा), एन आर बी भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, ट्राँबे

उन्नीस से बढ़ बीस का हो कर, इक्कीस की ओर हुआ अग्रसर,

बढ़ता ही जाता कदम–कदम पर, कोरोना के हरितबीज का प्रहार,

घातक है कोरोना की हर लहर, गतिमान दुनिया गई है ठहर,

दिख रहा है चारों तरफ असर, बरप रहा है कोरोना का कहर,

कीप डिस्टेन्स हुआ दो गज दूर, मास्क बना नकाब का दस्तूर,

हाथ का साथी बना सेनेटाइजर, गलबहियों को दूर से नमस्कार,

रोजाना मरते कोरोना के शिकार, गिनती हर दिन सैकड़ों हजार,

नियंत्रण से ही कम हो वृद्धि–दर, समाप्त भी हो जाए मृत्यु–दर,

दवाई–ढिलाई का घनचक्कर, वैक्सीन पर शोध युद्ध स्तर,

जड़ी–बूटियाँ भी देती टक्कर, टीका नहीं टिप्पणी किसी पर,

अनचाहा कोरोना बन गया नासूर, पूरी दुनिया हुई है बेबस–मजबूर,

वर्षगाँठ पर दुआ हाथ जोड़ कर, कोराना अमर हो मगर मर कर।

कोरोना काल के लॉकडाउन में हिंदी साहित्यिक सफर के संबंध में गूगल को भी खंगाला, जिसमें मुझे विभिन्न साहित्यकारों के कोरोना संबंधी लेख भी पढ़ने को मिला। विद्वान साहित्यकार "संतोष त्रिवेदी" कहते हैं कि उत्तम कोटि का साहित्य सन्नाटे में ही रचा जाता है। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने इस विकट कोरोनाकाल में फैले सन्नाटे में सैंतीस (37)किताबें रच डाली। उसी प्रकार "डॉ. जैन" कहते हैं कोरोना काल में यूट्यूब चैनल और तमाम अन्य माध्यमों का भरपूर उपयोग किया और युवा साहित्यकारों से ऑनलाइन संवाद का क्रम जारी रहा। डॉ0 चन्द्र कुमार जैन कहते हैं– कोरोना महामारी के कालखंड में साहित्य की किताबें पढ़ी–गुनी ही नहीं जा रही है बल्कि उनसे जिया भी जा रहा है। कोरोना और ऑनलाइन किताबों का अद्भुत रिश्ता जुड़ गया है। घर में उपलब्ध नई पुरानी किताबों को अलमारियों की कैद से एकबारगी मुक्ति भी मिल गयी।

साहित्यकार "असगर वजाहत" कहते हैं– कोरोना काल में साहित्यकार विचलित हैं, ये साहित्य में रेखांकित होगा। वे कहते हैं यह व्यक्ति के उपर निर्भर करता है। अगर साहित्यकार कविता लिखते हैं तो इसे यथार्थ के रूप में रखेंगे। वैसे कोरोना काल में साहित्यिक सृजन की एक चुनौतियां है। कोरोना का कहर जिनपर पड़ा है संभवतः वह स्वयं नहीं लिख पायेगा। संभवतः भोगने वालों से बेहतर देखने वाला लिखेगा। भोगने वालों के पास भाषा–अभ्यास का अवकाश कहां है। कोई अपने दर्द की सत्य –कथा दर्ज कराने आज के किसी "निराला"के पास कोरोना काल का दर्द लेकर जायेगा और कथानक लिखा जायेगा। महामारियों के कथानक पर आधारित अतीत की साहित्यिक रचनाएँ आज की संकट की भी सिनाख्त करती है। इतिहास कहता है कि अपने समयों में महामारियों की भयावहता को चित्रित करने के अलावा अपने समय की विसंगतियों, गड़बड़ियों और सामाजिक द्वन्दों को रेखांकित किया गया है।

समकालीन हिंदी साहित्यिक सफर

समकालीन साहित्य में भी प्लेग, हैजा, चेचक,फ्लू और तपेदिक पर विशेष रूप से चर्चा की गई है। इन महामारियों ने घर–परिवार ही नहीं गाँव के गाँव और शहर के शहर को उजाड़ा है और पीढ़ियों को एक गहरे भय और संत्रास में धकेला है। इस महामारी काल को तत्कालीन मूर्धन्य साहित्यकार, जिसने देखा है, भोगा है और आपने साहित्य के माध्यम से उजागर किया है। 1903 में रविन्द्रनाथ टैगोर तपेदिक से जूझती अपनी 12 साल की बेटी को स्वास्थ्य–लाभ के लिए रामगढ़ की हवादार पहाड़ी पर ले गए लेकिन कुछ महीने में ही उसने दम तोड़ दिया था। चार साल का बेटा भी नहीं रहा।

टैगोर ने रामगढ़ प्रवास के दौरान 1913 में "अर्धचन्द्र" नाम की कविता संग्रह में अपने मनोभावों का वर्णन किया है

अंतहीन पृथ्वी के समुद्र तट पर मिल रहे हैं बच्चे

मार्ग विहीन आकाश में भटकते हैं तूफान

पथ विहीन जलधाराओं में टूट जाते हैं जहाज

मृत्यु है निर्वाध और खेलते हैं बच्चे

अंतहीन पृथ्वियों के समुद्र तटों पर बच्चों की चलती है

एक महान बैठक।

ये पंक्तियाँ टैगोर की व्यथा का वर्णन करती हैं।

महाकवि निराला ने अपनी आत्मकथा "कुल्ली भाट" में 1918 के महाकवि निराला ने अपनी आत्मकथा "कुल्ली भाट" में 1918 के दिल दहला देने वाले फ्लू से हुई मौतों का ज़िक्र किया है जिसमें उसकी पत्नी, एक साल की बेटी और परिवार के कई सदस्य और रिश्तेदारों की जानें गई थीं। दाह संस्कार के लिए लकड़ियाँ कम पड़ जाती थीं। जहाँ तक नज़र जाती थी गंगा के पानी में लाश ही लाश नजर आतीं थीं। यह है निराला जी की महामारी की विभिषिका की व्यथा।

फिर महान साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु ने "मैला आँचल" में मलेरिया, कालाजार की विभिषिका के बीच ग्रामीण जीवन की व्यथा का उल्लेख किया है। ठीक इसी प्रकार जैसे आज कोरोना वैश्विक महामारी का रूप ले चुका है इसके चलते अनेक परिवार, अनेक गाँव तथा शहर तबाह हो रहा है, इसके विध्वंसक परिणाम की गाथा भी नये दौड़ में साहित्यकारों द्वारा लिखी जायेगी। कोरोना काल में लॉकडाउन से सबसे ज्यादा प्रभावित बच्चे हुए हैं। स्कूल, कॉलेज बंद है। स्कूल कॉलेजों ने ऑनलाइन पढ़ाई की शुरुआत की है ताकि अभिभावक से फीस जमा करवाया जा सके। बच्चे ऑनलाईन पढ़ाई कर रहे हैं। इससे बच्चों पर अत्यधिक मानसिक दवाव भी बढ रहा है। इससे अधिकांश बच्चे चिड़चिड़े भी होने लगे हैं। यह पढ़ाई अच्छी भी है और बुरी भी, बरहाल यह मेरा मानना है।

कोरोना काल में हिंदी साहित्यिक सफर–

साहित्यकार अंजु दास ने "गीतांजलि" में लिखा अपने दशक के प्रधानमंत्री के आह्वाहन पर दिनांक 22 मार्च 2020 दिन रविवार को आस – पास के लोगों को जनता कर्फ्यू का पालन करने के लिए प्रेरित किया एवं जनता कर्फ्यू का पूरी मन से पालन करते हुए सुबह के 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक अपने पूरे परिवार के साथ घर में रही। प्रधानमंत्री जी के द्वारा सुनिश्चित समय संध्या 5:00 बजे से 5:05 बजे तक ताली और

थाली बजाकर अपने निकटतम पड़ोसियों की हौसला फजाई के साथ– साथ सोशल मीडिया के माध्यम से कोरोना से सम्बंधित एक मुक्तक सुबह साझा कर जन –जन को कोरोना के खतरे के प्रति सचेत किया

"स्वस्थ खुद भी ,स्वस्थ औरों को बनाएं'

जड़ से कोरोना सभी मिलकर मिटाएं।

आपदा की ये घड़ी है कैसी आई,

खुद बचें औरों को भी मिलकर बचाएं।"

कोई ज़ख्म हो तो दवा कर भी ले आदमी और कुछ वक्त में स्वस्थ हो जाए लेकिन कोरोना एक ऐसा वायरस है जो लाइलाज़ होने के साथ–साथ इतना विनाशकारी है कि देखते – देखते आदमी काल के गाल में समा जाता है। देश विदेशों से जिस तरह से कोरोना पीड़ितों के मौत की खबर आ रही थी वह काफी हृदय विदारक थीं। ऐसा लग रहा था कि यदि यही हाल रहा तो सम्पूर्ण सृष्टि मानवविहीन हो जाएगी। इस खौफ़नाक मंज़र के बारे में सोचकर ही रूह काँप गई और 26 मार्च की सुबह रचित एक मुक्तक में उस खौफनाक मंज़र की तस्वीरें और लोगों से घर के अंदर रहने की विनती कब कलमबद्ध हो गई पता न चला जिसे सोशल मीडिया पेज पर सांझा भी किया।

"आदमी– आदमी को तरस जाएगा

मौत कोरोना बनकर यूँ जब आएगा।

कुछ दिनों तक सभी अपने घर में रहो,

वरना कोरोना कितनों के घर खाएगा।"

सम्पूर्ण भारत में जहाँ लॉकडाउन हो चुका था वहीं हर तरह के छोटे – बड़े उद्योग , कल – कारखाने पूर्णतः बंद हो गये थे , जो बहुत से गरीब मजदूरों की जीविका का एक मात्र साधन थे। ऐसा ही हुआ, अचानक सभी मजदूर जो अपने परिवार के भरण पोषण के लिए दूर शहरों में कार्यरत थे सभी अपने – अपने घर की तरफ चल पड़े। जिसका एक विशाल अफरा–तफरी भरा जन सैलाब दिल्ली में देखने को मिला जिसमें विभिन्न राज्यों के प्रवासी मजदूर थे क्योंकि सबकी आर्थिक हालत ख़राब हो चुकी थी और कहीं न कहीं उन लोगों के मन में यह बात घर कर गई थी कि भूखे प्यासे मरने से अच्छा है अपने– अपने घर, अपने परिवार के बीच रहकर वहीं कुछ काम – धंधा कर के जीवन यापन किया जाय। ऐसे मंज़र को देखने के बाद उनकी कलम ने 29 मार्च 2020

की रात को दो मुक्तकों में मजदूरों की संवेदनाओं को समेटने की कोशिश की जिसे सोशल मीडिया पर साझा भी किया

"आसमां का परिंदा हूँ, घर चाहिये'

हाथ सर पे रखो कोई दर चाहिये।" एवं

"देश के हालात पे रोना आया है,

मौत बनकर जब से कोरोना छाया है।"

जब प्रवासी मजदूरों को उनके घर भेजने की बात हुई तो सभी को एकसाथ भेज पाना सरकार के लिये लोहे के चने चबाने वाली बात सिद्ध हो रही थी। वहीं सरकार व उनके नुमाइंदों की हरकत से परेशान होकर भारी संख्या में मजदूर जो जहाँ थे वहीं से अपने – अपने शहरों व गाँवों के लिये साइकिल पर या पैदल ही निकल पड़े जिससे कइयों की मौत रास्ते मे हो गई। सड़क हादसों , रेल हादसों, भुखमरी, खराब भोजन, पानी का अभाव, सरकार की अनदेखी आदि– आदि कारणों से मजदूरो की मौत होने लगी। वही मजदूर जो भारत की अर्थव्यवस्था का मुख्य स्तंभ है। मजदूरों की इस बदहाली को देखते हुए, उनके दुख दर्द, संवेदनाओं को कलमबद्ध करते हुए 12 मई 2020 को एक गीत लिखकर सोशल मीडिया पर साझा किया

"जीवन है सुख दुख का मेला, अज़ब साँझ गज़ब सवेरा।

हौसला रख हिम्मत ना हार, मिटेगा राम का अँधेरा।

कोरोना के कारण ही तो , किस्मत से मजबूर हुए।

लॉकडाउन ने ये बताया, घर से कितने दूर हुए।

न कोई साधन पास उनके, और न कोई सहारे।

कैसा दिन आया जीवन में, चल पड़े पैदल चल पड़े बेचारे।"

साहित्यकार प्रतिभा प्रियांशी लिखती है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर हम सभी देशवासियों ने 05 अप्रैल 2020 को रात 9 बजकर 9 मिनट पर परिवार वालों के साथ मिलकर बालकनी, छत, घर के गेट पर खड़े होकर दीप, मोमबत्ती और टॉर्च जलाकर कोरोना योद्धाओं के प्रति सम्मान प्रकट किया। इस अवसर पर उनका एक मुक्तक

नौ बजकर नौ मिनट तक दीप जलायें,

छत और बालकनी को उजालों से सजायें

रौशन होगा घर–आँगन, रौशन होगा देश

एकता का दीप जलाकर कोरोना को हरायें!!

कोरोना काल में मन व्यथित रहने के बावजूद साहित्यकारों की कलम खूब चली। मेरी एक छोटी–सी रचना

अभी दौरे पर आयी है कोरोना

सँभलकर रहें, उससे जरा भी डरो ना

ना छोड़ो उसके डर से शहर अपना

गर रहे सफाई तो नहीं बरपायेगा वो कहर

अपना खुद की देख–भाल करते हुये

आस–पास की सफाई कर लो ना

उनसे जरा भी डरो ना!!

आँखें ही आँखें दीखती हर तरफ

उसकी ही चर्चा होती है चौतरफ

आधे चेहरे छुपे हैं मास्क के अंदर

देखने लायक है ये मास्क का मंजर

ना निकलें घर से बाहर कुछ दिन

एक–दूसरे से दूर–दूर रह लो ना

उससे जरा भी डरो ना!!

कई रचनाकारों ने इस दौर में अपनी–अपनी दृष्टि में अदभुत रचनाओं का सृजन किया है। इसको देखते हुए 'सृजनोन्मुख' पत्रिका के संपादक और अनुज अतुल मल्लिक ‘अनजान' ने रचनाकारों के इन अभिव्यक्तियों को पुस्तकाकार देने हेतु 'कोरोना काल में हिंदी साहित्यिक सफर' ई–बुक प्रकाशित करने का सुझाव दिया। इस दरम्यान 'सृजनोन्मुख प्रकाशन' की नींव भी रखी गई।

(श्यामानंद लाल दास "सहर्ष") कोरोना काल में भौतिक रूप से कहीं सफर करना असंभव था। ऐसे में इस कोरोना काल में साहित्यक सफर ही हमारा एक मात्र सहारा बचा, जिसके माध्यम से मानसिक सफर किया जा सकता था। जानलेवा संक्रमण का यह विनाशकारी कोरोना काल पीढ़ी दर पीढ़ी याद किया जाएगा। इस हकीकत को झुठलाया नहीं जा सकता है। लॉकडाउन की अनिवार्यता से उपजी प्रतिकूल परिस्थितियों की पीड़ा को साहित्यकारों ने बहुत करीब से देखा, सुना, पढ़ा और तीव्र मंथन किया। विनाशकारी कोरोना काल में रचनाकारों की लेखनी से निकली सृजन की सुधा समाज के साहित्य प्रेमियों को तृप्ति दे रही है। इस कोरोना काल में अनेक साहित्यकारों ने अपने अपने ढंग से विभिन्न विधाओं में अपने मनोभावों को व्यक्त किया। इन्टरनेट, वाट्सएप ग्रुप या फेसबुक के माध्यम से सैकड़ों रचनाएँ कोरोना वायरस से जंग में जुटे योद्धाओं के मनोबल को 0ंचा करती रही और 0र्जा देती रही। सही पूछे तो इस लॉकडाउन का एक तरह से आनन्द उठाया गया। शुरुआती खबरों और हालातों से थोड़ा अवसादग्रस्त जरूर हुआ बाद में समझा कि लॉकडाउन कितना महत्वपूर्ण है।

डॉ विभा माधवी जी ने 'आशुतोष' जी की पुस्तक '"गिरे हैं आँख से मोती"' ग़ज़ल संग्रह की प्रूफ रीडिंग पूरा करके भेजा और "कोरोना काल में साहित्यिक सफर" लिखने की शुरुआत की। इन सबके अलावा कई "ऑनलाइन कवि सम्मेलन" में भी शामिल हुई। बहुत से साहित्यिक हस्ती से जान पहचान का दायरा बढ़ाया "ऑनलाइन कवि सम्मेलन"में। कुल मिलाकर कोरोना काल साहित्यिक सफर के लिए काफी उर्वर रहा और साहित्य सागर में खूब गोते लगाये ।

साहित्यिकार मदन कश्यप की लॉकडाउन डायरी भी छपकर लगभग तैयार है। 2021 में श्री प्रकाश शुक्ल की 'महामारी और कविता' के अलावा "अरुण होता" के संपादन में 'तिमिर में ज्योति जैसे' और कौशल किशोर के संपादन में 'दर्द के काफिले' जैसे कई महत्वपूर्ण संग्रह आए हैं, जिनमें कोरोना काल के दौरान रची गई कविताएँ, आलेख और संस्मरण शामिल हैं।

कवि और संस्कृतिकर्मी कौशल किशोर बताते हैं कि इस महामारी के दौर में सभी संवेदनशील रचनाकारों ने सृजनात्मक हस्तक्षेप किया और इस दौरान रची गई कविताएँ, कहानियाँ और संस्मरण अपने समय के दस्तावेज हैं। जब भी ऐसा कोई बड़ा संकट आया है, साहित्यकारों ने अपने दायित्व का निर्वाह किया है। इस बार भी ऐसा ही देखने में आ रहा है। इस बार तो कोरोना ही नहीं, दूसरी तरह की तमाम परिस्थितियां भी झेलनी पड़ रहीं हैं, जिसकी अभिव्यक्ति रचनाओं में हो रही है। इसी दौरान सेतु प्रकाशन ने कई महत्वपूर्ण पुस्तकें छापीं। आनंद स्वरूप वर्मा का 'पत्रकारिता का अंधा युग' से लेकर रज़ा फाउंडेशन के साथ कई किताबों की श्रृंखला, ज्ञानरंजन की किताब 'जैसे अमरूद की खुशबू', जयप्रकाश चौकसे का 'सिनेमा जलसाघर', प्रचंड प्रवीर का 'कल की

बात – षड़ज, ऋषभ और गांधार', रणवीर सिंह की पारसी थिएटर पर एक महत्वपूर्ण किताब, संजीव की 'पुरबी बयार', आधुनिक हिन्दी रंगमंच और हबीब तनवीर के रंगकर्म पर अमितेश कुमार की किताब 'वैकल्पिक विन्यास', चंडी प्रसाद भट्ट की जीवनगाथा, फणीश्वरनाथ रेणु पर भारत यायावर की पुस्तकें और ऐसी तमाम पुस्तकें जो अलग अलग विषयों और संदर्भों में रची गईं।

सेतु प्रकाशन के अमिताभ राय का कहना है कि साहित्य सृजन एक निरंतर प्रक्रिया है और कोरोना काल के दौरान लेखकों, रचनाकारों और कई पत्रकारों ने इस प्रक्रिया को और तेज़ किया है। लॉकडाउन की त्रासदी, कोरोना का आतंक, जीवन शैली से लेकर सोच में आए बदलाव के साथ–साथ सत्ता की विद्रूपता के कई रंग इन रचनाओं में सामने आए हैं। उनके पास पुस्तक मेले को लेकर कम से कम सौ से ज्यादा किताबों को छापने का दबाव तत्काल है। इसके अलावा अशोक वाजपेयी रचनावली भी अंतिम चरण में है। मधुकर उपाध्याय की दस खंडों में छपी किताब– बापू और मदीह हाशमी की लिखी फैज़ अहमद फ़ैज़ की जीवनी – प्रेम और क्रांति के अलावा मंगलेश डबराल का कविता संग्रह भी सेतु प्रकाशन ने इसी साल छापा है।

साहित्य एक मरहम तो हमेशा से रहा है पर तकनीक का संग लेकर तो उसमें – एक अलग ही निखार आया है। इससे इसका क्षेत्र और विस्तृत हुआ। आज घर में बैठे–बैठे लोग उन्हें भी देख–समझ पा रहे हैं जो पहले केवल मंच पर ही दिख पड़ते थे। ऐसे समय में हमने अपने मन में उमड़ आए भावों को जो समय मिलता, उसमें फटाफट शब्द देने की कोशिश की। अभी मिलना–मिलाना तो बंद है, तो साहित्यिक गोष्ठियों, सम्मेलनों का हो पाना असंभव। फिर इसके लिए आभासी मिलन रखे गए, जो अभूतपूर्व कदम था। इसमें जमे जमाए साहित्यकारों का तो शिरकत करना निश्चित था ही, नवांकुरों को भी अपनी कविताएँ, कहानियाँ लाइव आकर दर्शकों के सामने पढ़ने का मौका कई बार और कई जगहों पर मिला। वरना कब किसी ने सोचा था कि बड़े–बड़े नामों के साथ उन्हें भी लोग सुनेंगे, देखेंगे और समझेंगे। कई लोगों को अंतर्जाल की अनुपलब्धता से क्षोभ भी हुआ, लोग उन्हें सुन नहीं पाए, वो अपनी बात रख नहीं पाए।

उपसंहार

वर्तमान समय में हम सभी को ऐसी परिस्थितियों से गुजरना पड़ा या कह सकते हैं कि आज भी गुजरना पड़ रहा है जहाँ कुछ भी निश्चित नहीं है। चारों तरफ कई–सारे प्रश्नवाचक चिन्ह खड़े दिख रहे हैं। हर क्षण मन सशंकित एवं असमंजस की स्थिति से ग्रसित होकर तमाम प्रश्नों के घेरे में उलझा हुआ है। ऐसे में साहित्य, हमारे आत्मबल को बढ़ाते हुए यह संदेश देता है कि हमें अब अपने जीवन को दिखावे के लिए नहीं बल्कि अपनी स्वयं की मानसिक, शारीरिक और दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के आधार पर जीना होगा। हमें यह भी याद रखना होगा कि हम अपनी ही लक्ष्मण रेखा में धीरे जरूर

हैं परन्तु देश, समाज एवं अपनों के प्रति अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व को सफलता पूर्वक निभाने में पूरी तरह से सक्षम हैं।

यह साहित्य की क्षमता ही है जो हमारे जैसे कच्चे कलम वालों के मन को भी झंकृत कर हमारे अनगढ़ शब्दों को कोरे कागज के पन्नों पर बिखेर देने को विवश कर देता है। ऐसे में मुझे भी घर बैठे कई सारी पत्र–पत्रिकाओं से जुड़ने, उन्हें पढ़ने, समझने का अवसर मिला। कई रचनाओं को पढ़कर अपने ज्ञान के सीमित कोष को बढ़ाने में सहायता मिली। कई लेख–आलेखों ने भी अपने स्वरूप को मेरी कलम से साकार बनाया। सीधे और संक्षेप शब्दों में यह सब कोरोना–काल की परिस्थितियों ने ही संभव बनाया है।

अंततः कुछ भी हो लेकिन इस बात से थोड़ा भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि भले ही कोरोना–काल ने विश्व मानव मन को डर के अंधकार में ढकेल दिया हो परन्तु इन्हीं परिस्थितियों ने हमें अपने भीतर छीपे साहस, धैर्य, संघर्ष, मेहनत, कर्तव्य, धर्म, संस्कृति, अनुशासन, भाईचारा, मानवता, आत्म संयम, आत्मनिर्भरता, भारतीय संस्कृति एवं प्रकृति बोध इत्यादि सभी को पूर्णः जीवंत बनाने और इसके आधार पर एक सुंदर, स्वस्थ समाज को फिर से गढ़ने की राह भी दिखाई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. संकुल दिव्य चक्षु (वार्षिक पुस्तक) का संपादन (2013–14)।
2. मासिक पत्रिका 'परमान टाईम्स' (अनियतकालीन) का संपादन (2016 से)
3. मासिक पत्रिका 'सृजनोन्मुख' (मासिक) का संपादन/प्रकाशन (2018 से)। यह पत्रिका जनवरी 2018 से निरंतर प्रकाशित हो रही है। इसके सभी अंकों का संपादनध्प्रकाशन।
4. साझा संग्रह नये पल्लव 7 का संपादन (2018)
5. अलविदा साल एवं देहाती काव्याभिनन्दन (पुस्तक) का सह संपादक (2019) ।
6. पाक्षिक पत्रिका 'नये पल्लव मंथन' (मासिक) का सहयोगी संपादक (2018 से) ।
7. नये पल्लव प्रकाशन द्वरा प्रकाशित साझा संग्रह यथा– नये पल्लव 1 से 4, 6 एवं 7, घरौंदा 1 एवं 2, मनभावनी कथाएँ, मनभावनी कहानियाँ, बूंद–बूंद शब्द आदि साझा संग्रह पुस्तक का सहयोगी संपादक (2017 से लगातार)

8. नये पल्लवध्तनय प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'नव काव्यांजलि 2' में उप संपादक (2018)

9. themyopinions-com का संपादन (2017)।

10. parmantimes-com वेब पोर्टल का संपादन (2019)

11. themyopinions-com का निर्माण एवं लेखन कार्य।

12. अन्य सोशल साईटों एवं वेबसाईटों पर रचनाओं का प्रकाशन।

13. प्रतिलिपि एप्प पर रचनाओं का प्रकाशन ।

14. फेसबुक, मूषक, ज्ञानएप्प पर रचनाओं का प्रकाशन।